This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 8963

Unique Paper Code : 2052601 F-4

Name of the Paper : आधुनिक कविता (Aadhunik Kavita)

Name of the Course : Hindi : Allied Course

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. निम्नलिखित काव्यांश में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 9

दो शस्त्र पहले तुम मुझे, फिर युद्ध सब मुझसे करो,

यों स्वार्थ-साधन के लिए मत पात-पथ में पग धरो ।

कुछ प्राण-भिक्षा मैं न मांगता हूँ भीति से,

बस शस्त्र ही मैं चाहता हूँ धर्म-पूर्वक नीति से ॥

कर में मुझे तुम शस्त्र देकर फिर दिखाओ वीरता,

देखूं, यहाँ मैं फिर तुम्हारी धीरता, गंभीरता ।

अथवा

गंगा की धरती पर जब दृग खोले

देखा मिट्टी होते सपने भोले

टकसालों में सस्ते दिनमान ढले

मरघट में व्यक्ति नहीं आदर्श जले

जलता हस्ताक्षर है बदली पर जो

है और न कोई, मैं ही तो हूँ वो ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3×14=42

(क) महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

छायावादी प्रवृत्तियों के आधार पर सुमित्रानंदन पन्त की कविताओं का मूल्यांकन कीजिए ।

(ख) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं की विशेषताएँ लिखिए ।

अथवा

'हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए' गजल के माध्यम से दुष्यंत कुमार क्या संदेश देना चाहते हैं ? स्पष्ट कीजिए ।

(ग) अज्ञेय की कविताओं के कला-पक्ष का विवेचन कीजिए ।

अथवा

'देश उवाच' कविता के माध्यम से वीरेन्द्र मिश्र क्या संदेश दे रहे हैं ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए ।

3. निम्नलिखित काव्यांश में से किसी एक का रचना-कौशल (लगभग **150** शब्दों में) निर्देशानुसार उद्घाटित कीजिए : 9

निर्देश : भाव-सौंदर्य

'शीश झुका आओ बोला
बाहर का आसमान,
'शीश झुका आओ बोली
भीतर की दीवारें,
दोनों ने ही मुझे
छोटा करना चाहा,
बुरा किया मैंने जो
यह घर बनाया ।

अथवा

निर्देश : कला-सौंदर्य

शलभ मैं शापमय वर हूँ,
किसी का दीप निष्ठुर हूँ ।
ताज है जलती शिखा
चिनगारियाँ शृंगारमाला
ज्वाल अक्षय कोष सी
अंगार मेरी रंगशाला
नाश में जीवित किसी की साध सुन्दर हूँ ।

4. टिप्पणी लिखिए :

(क) 'नया कवि : आत्म स्वीकार' कविता का प्रतिपाद्य । 8

अथवा

'आए महंत वसंत' कविता का कला-सौंदर्य ।

(ख) 'मैं नीर भरी दु:ख की बदली' कविता की संवेदना । 7

अथवा

'इस पार उस पार' कविता का प्रतिपाद्य ।